Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M.A. Semester — III
Phil. CC—10
Contemporary Western Philosophy

GRB BOOKS

Notes / 1 Hegel: "Absolute Idealism"

हीगेल एक महान जर्मन दार्शनिक थे। उनके दर्शन ने बहुत से नवीन विचारों को प्रस्तुत किया। दर्शन के सम्बन्ध में हीगेल के विचार थे कि दर्शन की रचना नहीं की जा सकती है उसको केवल समझाया जा सकता है। उन्होंने जहाँ तक बन पड़ा अपने विचारों में वास्तविकता को प्रकट किया।

हीगेल के सम्पूर्ण दर्शन का आधार विवेक और यथार्थ है। हीगेल के अनुसार प्रत्यय ही परम तत्व है। यह प्रत्यय या विज्ञान निरपेक्ष है, अतः हीगेल के निरपेक्ष प्रत्ययवादी या विज्ञानवादी माना गया है। उनका परम तत्व प्रत्यय या विज्ञान वस्तु से पृथक नहीं। अमूर्त होकर भी मूर्त से सम्बद्ध है। एक होकर भी अनेक में समावृत है। हीगेल ने अपने सम्पूर्ण दर्शन में एक तत्व को परम तत्व माना है, परन्तु एक से अनेक का सम्बन्ध भी बतलाया है। उनका एक तत्व सर्वसमावेशी है। उनका परम तत्व सर्वप्रथम निरपेक्ष प्रत्यय या विज्ञान के रूप में प्रकट होता है। यह विज्ञान का पक्षरूप (Thesis) है। इसे विज्ञान का तर्कशास्त्र में निरूपण किया गया है। पुनः विज्ञान अपने को बाह्य प्रकृति के रूप में प्रकट करता है। यह प्रकृति विज्ञान (Philosophy of nature) का विषय है। यह विज्ञान का प्रतिपक्ष है। परम तत्व
Anti - thesis

सुगम पास-बुक

GRB BOOKS

Notes!

विज्ञान का तीसरा स्वरूप पूर्वोक्त दोनों का सामञ्जस्य है। यह विज्ञान का समन्वय रूप (Synthesis) है। यह तत्त्व है। हीगेल के अनुसार आत्मा का विकास में परम विज्ञान के आन्तरिक तथा बाह्यरूप का समन्वय है।

अर्थात हीगेल की धारणा थी कि विवेक गतिशील है वह बदलता रहता है। यथार्थ और विवेक में सदैव संघर्ष होता रहता है। अतः द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। किसी वस्तु का विकास सीधा नहीं होता है, बल्कि तिरछे और उतार-चढ़ाव के रूप में होता है। किसी भी वस्तु या संस्था का निर्माण तीन अवस्थाओं में से होकर गुजरता है, जिनको हीगेल ने तीन नाम दिये हैं — (1) वाद (Thesis), (2) प्रतिवाद (Anti Thesis), (3) संवाद (Synthesis)। वाद में वास्तविकता का एक रूप, प्रतिवाद में उसका उलटा रूप और संवाद में इनका समन्वय हो जाता है और एक नवीन आकार का जन्म होता है।

द्वन्द्ववाद विशुद्ध तर्क की अत्यन्त निराकार धारणा से आरम्भ होता है और उनका अन्त विचार के अत्यन्त साकार रूप (अपनी पूर्ण व्यापकता तथा एकाग्रता के साथ निरपेक्ष बुद्धि के दर्शन में होता है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes / 3

GRB BOOKS

हीगेल के अनुसार सर्वोच्च प्रत्यय या विज्ञान शुद्ध भाव तत्व का भाव (Pure being) है। इस भाव का ज्ञान हम अमूर्तीकरण (Abstraction) द्वारा प्राप्त करते हैं। हीगेल अपने तर्कशास्त्र में सिद्ध करते हैं कि सभी सांसारिक वस्तुओं की यथार्थ सत्ता केवल भाव है। यह भाव ही प्रथम तत्व है, जिससे सभी वस्तुओं की उत्पत्ति होती है।

विज्ञान को ही हीगेल सत (Real) मानते हैं तथा स्वीकार करते हैं। सत केवल बुद्धिगम्य है (Real is rational) इसका तात्पर्य है कि सत्ता और बोध में तादात्म्य सम्बन्ध है। बोध ही सत्ता है, सत्ता ही बोध है। परमतत्व शुद्ध सत्ता या भाव है परन्तु इस भाव को हम नहीं बतला सकते कि यह (भाव) क्या है? हमें यही मालूम है कि किसी वस्तु को विश्लेषण करने पर अन्त में केवल वस्तु की शुद्ध सत्ता ही शेष रह जाती है। इस मेज से नीलापन, भारीपन, कड़ापन आदि सभी गुणों को निकाल लें तो अन्त में मेज, है अर्थात मेज का भाव ही शेष रहेगा। परन्तु यह भाव न तो कोई द्रव्य है और न गुण। इसे हम किसी पदार्थ या वस्तु की संज्ञा

गम्स पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

नहीं दे सकते
कह सकते हैं. हम केवल यही
सामान्यों जैसे है कि मेज
लालपन आदि का काष्ठपन आदि विभिन्न
परन्तु इन सभी संघात सामान्यों में
सर्वोच्च सामान्य भाव है।
क्योंकि यह सबकी तार्किक
है। तर्क की दृष्टि से सबकी
सत्ता मान लेते हैं। ये पहले में वैयक्तिक
या भारी है या चौपाया मानते हैं। लेकिन
यदि मेज का आदि तत्व
ही नहीं तो लाल, भारी, चौपाया या भाव
का प्रश्न ही नहीं। अतः भाव है, मौलिक
या भाव तो सबकी पूर्वापेक्षा है। यह
भाव और नहीं है दोनों है। यह
विशेष की दृष्टि से
वस्तु नहीं, कोई पदार्थ नहीं। यह केवल
कह सकते कि यह आदि भाव। हम नहीं
या कुछ सकते कि यह मेज है।
बिना सामान्य है, परन्तु यह तो मनुष्य के
किसी का भाव इस हम भाव के
को सबका अभाव है। नहीं है
को हम कुछ नहीं कह सकते। अर्थात
केवल ऐसे शुद्ध भाव
सकते हैं। जिसका हम अभाव मान
भाव (Pure being) जैसे मेज का शुद्ध
यह प्रत्ययों लालपन या काष्ठपन आदि सभी
(Being = non being) को अभाव
भाव ही अभाव है। यह
हो जाता है। अभाव में परिवर्तित
अभाव को भाव का
सन्चरण परिवर्तन के लिए या

सुगम पास-बुक

Notes/

GRB
BOOKS

गति (Movement) की आवश्यकता है, क्योंकि परिवर्तन गति के बिना सम्भव नहीं। भाव अपनी गतिक (शक्ति का त्यागकर) अभाव की ओर (गति के कारण) सञ्चरण करता है। यही विश्व का द्वन्द्वात्मक विकास है। इसका क्रम ध्रुव अभाव और सम्भवन इसी को हीगेल विकास का त्रिकरूप बतलाते हैं। भाव तो सभी वस्तुओं की पूर्वापेक्षा है अर्थात भाव सबसे बड़ी जाति या सामान्य है। इस भाव या सर्वोच्च सामान्य से ही अन्य सभी सामान्य निकलते है। सभी सामान्यों में जो निकटतम होगा वह सबसे पहले निकलेगा। अतः निकटतम सामान्य को उपजाति कहेंगे। यह निकटतम उपजाति जाति में ही रहती है परन्तु जाति से उपजाति का निर्गमन विभेदक गुण के कारण होगा। यह विभेदक गुण जाति में ही विद्यमान रहता है। इसे जाति का निषेधात्मक लक्षण कहते है। यह अभाव का सूचक है। इस प्रकार प्रत्येक भाव में उसका अभाव अन्तर्निहित है जो सञ्चरण के द्वारा (गति के कारण) सम्भव हो जाता है। इस प्रकार जाति, उपजाति और विभेदक गुण यही त्रिक-रूप विकास का अन्तर्निहित सिद्धान्त है।

जाति (Genus) = भाव

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

Being – सत्ता (Thesis) निषेध (Non being)
(Differentia) = प्रतिपक्ष (Anti-thesis) = अभाव
(species) = संपक्ष समन्वय (Synthesis) (Becoming)

विभेदक (प्रजाति) इस प्रकार भवन। यही भाव और अभाव जाति पदार्थों की उत्पत्ति विनाश के नियम से सभी वस्तु या पदार्थ विकास के ही परिणाम है। अतः विरुद्ध भाव ही परम तत्व है।

परम तत्व के तार्किक स्वरूप पर तर्कशास्त्र में प्रकाश डाला गया है। यह निरपेक्ष रूप है। यह परमतत्व अमूर्त विज्ञान है। इसे निरपेक्ष रूप बुद्धि स्वरूप कह सकते हैं। Hegel तर्कशास्त्र में विज्ञान को सिद्ध करते हैं। इसी परम तत्व अनुसार परमतत्व बुद्धि इनके सत्ता है जो तर्क भाव या बुद्धिगम्य है।

कि विचारों के हीगेल का कथन है विवाद और उद्गम में वाद संवाद का महत्वपूर्ण हाथ होता है। इसने कहा है कि तर्क (Logic) प्रकृति (Nature) और आत्मा ये तीनों वस्तुएँ [illegible] है। जो सब स्थानों में प्राप्त होती है। इनके

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes

अनुसार प्रकृति और विचार को [illegible] होते हैं। [illegible] के दर्शन होते हैं। [illegible] और स्थान को पीठा दिया है इसी प्रकार मानव विवेक भी विस्तृत है। हीगेल के दर्शन में अनेक त्रिकोणात्मक तर्क हैं और इन्हीं के द्वारा हम अन्तिम सत्य तक पहुँच सकते हैं और अन्तिम सत्य तो एक विचार है। संसार भी एक विचार है। वह विचार और आत्मा को ही सत्य मानता है।

इसप्रकार हीगेल के दर्शन के तीन मौलिक आधार हैं:-

(1) चेतन-मस्तिष्क की सारी गतिविधियाँ द्वन्द्वात्मक हैं।

(2) यथार्थता स्वयं चेतन मस्तिष्क की एक प्रणाली है।

(3) यथार्थता केवल एक विचार है। यथार्थ सत्य की प्राप्ति केवल आत्मा से ही हो सकती है। आत्मा का चेतन-अवस्था तक पहुँच जाना ही इस विकास क्रम का अन्तिम ध्येय माना गया है।

इसप्रकार हीगेल के अनुसार सत् का यही स्वरूप है।